मगध साम्राज्य का उत्थान

मगध के उत्थान के समय, भारत में बड़े साम्राज्यों और महान सम्राटों का युग प्रारंभ होता है। ~~बिम्बिसार, जो कि~~ उत्तर पूर्व भारत में हर्यक वंश, शिशुनाग वंश, नंद वंश अन्ततः मौर्य वंश, जिसने सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधने का काम किया के साम्राज्यों का निर्माण मगध से हुआ। मगध साम्राज्य ने एक लम्बे समय तक संपूर्ण भारत में राजनीतिक, सांस्कृतिक आर्थिक एकता प्रदान करने में सफलता प्राप्त किया। मगध साम्राज्य के उत्कर्ष के पीछे अनेक कारक विद्यमान थे —

(1.) योग्य और साहसिक शासकों की लम्बी शृंखला —

वृहथ प्राचीन ग्रंथों में मगध का उल्लेख का साम्राज्य के रूप में हुआ है। पुराणों के अनुसार, मगध में प्रथम राजवंश की स्थापना "वृहद्रथ" ने किया था; उसका पुत्र महापराक्रमी जरासंध था। जरासंध की राजधानी गिरीव्रज थी जो मगध साम्राज्य का पहला राजधानी था। मगध का पहला ऐतिहासिक राजवंश "हर्यक वंश" था। जिसका संस्थापक "बिम्बिसार" था। बिम्बिसार बुद्ध का समकालीन था, बिम्बिसार के द्वारा विजय और विस्तार की शुरु की गई नीति अशोक की कलिंग विजय के साथ समाप्त हुई। बिम्बिसार ने अपने राज्य के विस्तार के लिए कूटनीति और युद्ध दोनों का सहारा लिया। बिम्बिसार ने सर्वप्रथम "अंग" के शासक वृहद्रथ को पराजित कर अंग को मगध में शामिल कर लिया और इसका शासन अपने पुत्र अजातशत्रु को सौंप दिया। बिम्बिसार ने वैवाहिक सम्बन्ध से भी अपनी स्थिति को मजबूत किया। उसकी प्रथम पत्नी कौशल राज्य की पुत्री और प्रसेनजीत की बहन थी

कौशल नरेश ने उक्त काशी का क्षेत्र दहेज में दिया। बिम्बिसार ने लिच्छवि राजा चेतक की पुत्री चेलना के साथ भी शादी की और वज्जी महासंघ के साथ संबंध कायम किया। बिम्बिसार ने तीसरी शादी पंजाब के मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा से शादी की इन वैवाहिक संबंधों ने मगध की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। साथ ही आर्थिक लाभ भी पहुंचाया। मगध की असली शत्रुता अवन्ती से थी जिसकी राजधानी उज्जैन थी अवन्ती के शासक चन्दप्रद्योत की बिम्बिसार से युद्ध हुई। परन्तु दोनों ने अन्त में दोस्त बन जाना ही उपयुक्त समझा। प्रद्योत की सद्भावना प्राप्त करने हेतु उसने उसकी बिमारी पर उसका इलाज करने हेतु वैद्य जीवक को भेजा था। इसी प्रकार गंधार के राजा के साथ भी हुये और निर्णायक युद्ध के बाद बिम्बिसार ने एक पत्र और दूत मंडल भेज कर गंधार का भी विश्वास प्राप्त किया। इस प्रकार, विजय और कूटनीति से बिम्बिसार ने मगध को प्राचीन भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य बना दिया।

बिम्बिसार की विजय का कारण यह था कि राज्य प्रशासन बहुत ही कुशल और सशक्त था। बिम्बिसार अपने राज्य में शांति और व्यवस्था का शासन स्थापित करने में पूर्णतः सफल रहा था। उसने अयोग्य अधिकारियों को शासन से अलग किया तथा योग्य अधिकारियों को प्रोत्साहित किया। [राज्य के उच्च अधिकारी जिसे राजभट्ट कहा जाता था कई वर्गों में विभाजित थे — सब्बत्थक, ये सामान्य मामलों को देखते थे (ii) सेनानायक या महामत्य थी वोहारिक महामत्ते जो न्यायाधीश होते थे। सभी अधिकारी अपने कर्तव्य के प्रति उत्तरदायित्व थे]

बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु जिसे कुणिक के नाम से जाने जाता था एक शासक सिद्ध हुआ। कहा जाता है अजातशत्रु अपने पिता की हत्या करने के बाद, गद्दी हासिल कि

अजातशत्रु राजगृह की किलेबंदी कराकर उसने प्रतिरक्षा की व्यवस्था को सुदृढ़ की तथा सोन और गंगा के संगम के समीप एक नयी राजधानी पाटलिपुत्र की नींव डाली। उसने मगध के साम्राज्य के विस्तार के लिए साम्राज्यवादी नीति अपनाया। उसका शासन "हर्यक वंश" का चरमोत्कर्ष काल था उसने काशी का कुछ भाग तथा वैशाली को अपने साम्राज्य में मिलाने का काम किया। अजातशत्रु के समय में ही प्रथम बौद्ध संगति हुआ। अजातशत्रु के पुत्र उदयन था जिसने पाटलिपुत्र को अपना राजधानी बनाया। उसने नयी राजधानी को यह जगह इस लिया चुना कि यह राज्य के मध्य में स्थित था। इसके अलावा पाटलिपुत्र व्यापारिक दृष्टिकोण से भी उपयुक्त था। अंग, वैशाली तथा काशी के पतन के बाद अब भी अवन्ती राज्य मगध का प्रबल प्रतिद्वन्दी था। मगध अवन्ती की जो प्रतिद्वन्दिता अजातशत्रु के समय से आरंभ हुआ था वह उदयन के साथ भी चला जिसका फैसला शिशुनाग या नंद के समय में ही हो सका।

शिशुनाग अन्तिम हर्यक शासक नागदशक को पदच्युत कर मगध का शासन संभाला। शिशुनाग का वंश पृथक था। और उसने प्रजा की सम्मति से मगध का राजा बना। शिशुनाग एक महान शासक सिद्ध हुआ उसने अवन्ती वत्स और कौशल राज्यों को पूर्णरूप से मगध में सम्मिलित कर लिया। उसने अपने शासन का केन्द्र वैशाली को बनाया। शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक था। उसके समय में बौद्धो की दूसरी संगति वैशाली में हुई। उसने पाटलिपुत्र को अपना नया राजधानी बनाया।

Scanned with CamScanner

ऐसा माना जाता है कि शिशुनाग वंश का अंतिम शासक नंदिवर्धन नाम दर्शक था। जिसकी हत्या के पश्चात् महापदम ने नंद वंश की स्थापना किया।

महापदम नंद नंद वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था। जिसने तत्कालिक प्राचीन ग्रंथों के अनुसार उत्तरी और दक्षिणी भारत के अधिकांश राज्यों को मगध में सम्मिलित करने में सफलता प्राप्त किया। इस प्रकार महापदम नंद ने बिम्बिसार द्वारा प्रारंभ किए गये कार्यों की पूर्ति की और मगध को भारत का सर्वश्रेष्ठ एवं विस्तृत राज्य बना दिया। नंदवंश का अन्तिम शासक सिकन्दर का समकालीन धननंद था, वह एक कठोर और लालची शासक था। जो प्रजा में अलोकप्रिय था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु मित्र मंत्री चाणक्य की सहायता से धनानंद को राज्य सिंहासन से हटाकर मगध का राज्य प्राप्त किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मगध के उत्थान में इन तीनो वंशो का सहयोग रहा। इन तीनो वंश में सबसे शक्तिशाली वंश हर्यंक वंश था जिसके बिम्बिसार और अजातशत्रु का परस्पर योगदान रहा। शिशुनाग वंश के शिशुनाग श्रेष्ठ शासक सिद्ध हुआ उसी प्रकार नंद वंश का संस्थापक महापदम नंद ने इस वंश की गरिमा को बनाए रखा।

मगध के उत्थान में योग्य और पराक्रमी शासक के अलावा विभिन्न भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी अभूतपूर्व योगदान रहा।

(2) भौगोलिक अनुकूलता — मगध की दोनो राजधानियाँ — प्रथम राजगीर और द्वितीय पाटलिपुत्र सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों पर थी। राजगीर पाँच पहाड़ियों की

एक श्रृंखला से घिरा था इसलिए वह दुर्भेद्य था। दूसरी ओर पाटलिपुत्र गंगा, गंडक और सोन नदियो पर स्थित था। पाटलिपुत्र से थोड़ी दूर पर घाघरा नदी भी गंगा से मिलती थी इस प्रकार हम देखते हैं कि चारो ओर नदियों से घिरे क्षेत्र के कारण पाटलिपुत्र की स्थिति भी अभेद्य हो गयी थी।

(3.) लोहा का समृद्ध भंडार — लोहे के समृद्ध भंडार मगध की राजधानी से बहुत दूर नहीं थे। लौह खनिज उपलब्ध होने के कारण मगध के शासक अपने लिए प्रभावशाली हथियार तैयार करा सकने में सफल हुए।

(4) उर्वर-मैदान — मगध राज्य मध्य गंगा मैदान में पड़ता था। लोहे के आविष्कार के कारण इस उर्वर प्रदेश से जंगल साफ हो चुके थे। भारी वर्षा होती थी इसलिए के बिना भी इलाके को उत्पादक बनाया जा सकता परिणामतः यहाँ के किसान पर्याप्त मात्रा में अनाज पैदा कर लेते थे और शासक अधिशेष उत्पादन में से कर के रूप में अपेक्षित उपज एकत्र करते थे। जो मगध के उत्थान में सहायक सिद्ध हुआ। दूसरे और अधिशेष उत्पादन के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत में व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि के कारण सेना के खर्च के लिए चुंगी के रूप में अतिरिक्त धन प्राप्त करते थे।

(5.) हाथियो की सेना — सैनिक संगठन के मामलों में मगध को एक खास सुविधा प्राप्त थी देश के पूर्वांचल से मगध को बड़े पैमाने पर हाथी उपलब्ध होते थे। जिसका प्रयोग अपने पड़ोसियों के विरुद्ध युद्ध में तथा दुर्गों को भेदने में किया।

Scanned with CamScanner

(6) रूढ़ि - विरोधी समाज — मगध का समाज रूढ़ि - विरोधी थे। कुछ ब्राह्मण मगध के लोगो को निम्न कोटि के समझते थे। चुकी इस प्रदेश का आर्यीकरण हाल मे हुआ था। इसलिए पूर्वकाल से ही वैदिक प्रभाव मे आये हुए राज्यो की अपेक्षा मगध में विस्तार के लिए उत्साह अधिक था।

इस प्रकार हम देखते हैं मगध के उत्थान में योग्य और महान शासको के शानदार श्रृंखला के अतिरिक्त विभिन्न परिस्थितियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। मगध भारत का प्रथम राज्य था जिसने साम्राज्य निर्माण के आदर्श को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया।

Scanned with CamScanner